eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर के चिन्तन की वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रासांगिकता

[1]नितुल शर्मा
[1]शोधार्थी, जे0 एस0 विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद।

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

''कबीरा खड़ा बाजार में, माँगे सबकी खैर
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर।। ''

कबीर सिर्फ कोई कवि या नाम नहीं है अपितु अपने में पूरा युग थे। जिनके काव्य और चिन्तन ने व्यक्ति, समाज, राजनीति सभी के हृदय को स्पर्श किया था। संतों का अनुभव उनके ऑखों देखे समाज अथवा इतिहास में ले गुजरते हुये संवेदनशील मनुष्य का अनुभव है। वे अपेक्षित, शोषित, बहिष्कृत, अशिक्षित, शास्त्र ज्ञान से रहित किन्तु संस्कारवान, रचनाकार थे। जो श्रमिक वर्ग से जुड़े थे। कबीर इतिहास की विषम परिस्थितियों में पिसे थे। इतिहास की उन विषम परिस्थितियों में ही इनके व्यक्तित्व को विसंगतियों से लड़ने का साहस प्रदान किया था। उनके साहित्य और चिन्तन की दूरदर्शिता हमें आपकी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में देखने मिल रही है। कबीर के चिन्तन और साहित्य के साक्षात दर्शन हमें वर्तमान शिक्षा नीति में होते है। चाहे वह बस्ते का वजन कम कर पुस्तकीय ज्ञान का विरोध हो मूल्य शिक्षा या बहुभाषा की बात हो या वह आत्म निर्भर भारत का स्वप्न हो। उनका चिन्तन पूर्णतः वर्तमान शिक्षा नीति के साथ प्रसंगानुकूल है।

मूल शब्द – कबीर , राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मूल्य शिक्षा रचनात्मकता।

Introduction

आज के युग के साथ भी भक्तिकालीन संत कवि कबीर का वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी प्रासंगिक बना हुआ है। कबीर ने अपने साहित्य ओर चिन्तन में जिन मूल्यों एवं प्रश्नों को उठाया है। नई शिक्षा नीति में ही नही अपितु वर्तमान सभ्यता एवं समाज के संकटों की पहचान करने में मदद देते है, और आधुनिक मनुष्य को एक बेहतर विकल्प की तलाश के लिये प्रेरित करते हैं।

प्रसंगानुकूलता की बात की जाये तो अभी हाल ही में रिलीज हुई बॉलीवुड फिल्म 'एनीमल' में कबीर जी के बहुचर्चित दोहे को कहा गया है जो इस प्रकार है –

''बुरा जो देखन मैं चला , बुरा ना मिलया कोय।
जो दिल खोजा आपना , मुझसे बुरा न कोय।।''

मुझे नही लगता कि इसके पश्चात् भी हमें कबीर चिन्तन की वर्तमान प्रासंगिकता सिद्ध करने की आवश्यकता है। कबीर की स्पष्ट घोषणा है – ''मैं कहता हूँ, आँखन देखी'' रचना की यह अनुभव केन्द्रियता हमारे समाज की सबसे मूल्यवान धरोहर है। आज जीवन के प्रत्येक स्तर पर सूचना की

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

प्रधानता हो गई है। अनुभव व संस्कृति के संकुचन का संकट है। कबीर का चिन्तन वर्तमान के सूचना तंत्र की निस्तारता को उजागर करता है।

कबीर का चिन्तन आज की दुनियॉ में मूल चिन्ता की अनुपस्थिति को भी रेखांकित करती है। आज के वाह्य चकाचौंध से भरी एवं स्वकेन्द्रित समाज में मूल्य चिन्ता का गहरा अभाव है। विवेक एवं दुःख से ही मूल्य चिन्ता उभरती है। कबीर में यह बोध उपस्थित है

—''सुखिया सब संसार है , खावै अरू सोवै।
दुखिया दास कबीर है , जागै अरू रोवै।।''

जो चिन्तन कबीर ने भक्तिकाल में ही कर लिया था वही बातें अब जाकर हमारी वर्तमान शिक्षा नीति 2020 में उल्लिखित हैं। इस शिक्षा नीति में भी मूल्यों को प्राथमिकता देते हुये कहा गया है कि हमारी शिक्षा का लक्ष्य अच्छे नागरिको का विकास करना, ऐसे इंसान जो तर्कसंगत बुद्धि और कार्य के साथ–साथ करूणा, सहानुभूति, ईमानदारी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लोकतांत्रिक व नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हो। यह नीति वर्तमान आवश्यकताओं के सन्दर्भ में परंपरागत मूल्यों के संवर्धन की पुर्न व्याख्या करती है। हमारे प्राचीन मूल्य सार्वभौमिक है। आज भी संसार में हर जगह के समान रूप से सत्य और प्रासंगिक है। इन मूल्यों से परिपूर्ण उच्चतम गुणवत्तायुक्त शिक्षा की सार्वभौमिक पहुॅच को लक्षित किया गया है। यह शिक्षा हमारे देश का वैश्विक ज्ञान के क्षेत्र में विश्व गुरू का दर्जा दिलाये हुये है। साथ ही राष्ट्र को न्यायसंगत जीवंतता प्रदान किये हुए है। विद्याथियों में संवैधानिक मूल्यो, मौलिक कर्तव्यों अपनी जड़ों से जुड़ाव के साथ–साथ परिवर्तनशील वैश्विक स्तर पर वैश्विक नागरिक की भूमिका और उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूकता विकसित की। नीति से स्पष्ट है कि विद्यार्थी व्यवहार, बुद्धि, कार्य, ज्ञान, कौशल और मूल्य से भारतीय होने पर गर्व महसूस करें। ऐसे वैश्विक नागरिक के रूप में विकसित हो जो मानव अधिकार स्थाई विकास और जीवन मापने तथा विश्व कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो। कबीर का साहित्य अपने समय के मूल संकट की पहचान करता है। विराट के लोप के कारण संबन्ध एवं आचरण के धरातल पर अंधता एवं कोलाहल दिखाई देता है। अतः कबीर विराट के महत्व को रेखांकित करते हैं। आप भी बाजार व्यवस्थाओं की क्षुद्रताओं के कारण राष्ट्र मानवता, सामाजिकता, स्वचिन्तन, रचनात्मकता, आलोचनात्मका जैसी बड़ी चीजों का बोध खत्म होता जा रहा है। कबीर का साहित्य और चिन्तन इन क्षुद्रताओं को पहचानने की शक्ति लेता है।

स्वचिन्तन, रचनात्मकता, आलोचनात्मकता, मानवता, सामाजिकता आदि को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी अपने मुख्य उद्देश्यों में रखा है। 21वीं सदी के विद्यार्थियों में तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए सोच विकसित करने की बात की है। इस तरह यह संशोधित शिक्षा नीति देशभर में प्रतयेक व्यक्ति की अद्वितीय क्षमताओं और प्रतिभाओं को पहचानने और बढ़ावा देने का प्रयास करतीं हैं।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

''रचनात्मकता अब उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि साक्षरता और हमें इसे उसी स्तर के साथ मानना चाहिए।'' – केन रॉबिन्सन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रत्येक छात्र की 'रचनात्मक क्षमता' के विकास पर जोर देती है। यह उस सिद्धान्त का पालन करती है जो कहता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक कौशल विकसित करना नहीं होना चाहिए। दोनों 'उच्च स्तरीय संज्ञानात्मक क्षमतायें' जैसे कि आलोचनात्मकता सोच और समस्या समाधान और संख्यात्मकता और साक्षरता की 'बुनियादी क्षमतायें– लेकिन भावनात्मकता, सामाजिकता और नैतिक क्षमताओं और स्वभाव को विकसित करने के लिए भी होनी चाहिए। सुशासन , स्वायत्ता और निशक्तिकरण के माध्यम से यह शिक्षा के सभी स्तरों पर रचनात्मकता, नवाचार और आउट ऑफ द बॉक्स सोच को प्रोत्साहित करता है।

कबीर का भाषावाद भी आज के वर्तमान समय में पूर्ण प्रासंगिक प्रतीत होता है। चूंकि कबीरदास जी ने स्वयं कहा है–

मसि कागद छूओ नहिं , कलम गहिं न हाथ

इसलिये निश्चित है कबीर की वाणी को उनके शिष्यों ने अंकित किया और उसके प्रस्तुतिकरण में वह अपनी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयासों से अछूतें नहीं रहे। कबीर की भाषा की विविधता के निम्न कारण परिलक्षित होते हैं। पहली कबीर युगीन परिस्थितियॉ ऐसी थीं कि उन्होने एक विषय पर नहीं अपितु हर विषय पर अपनी अभिव्यक्ति दी। राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक परिस्थितियॉ मानव को त्रस्त कर चुकीं थीं। अतः कबीर ने एक अंग मानसिक आत्मिक शांति के लिए आध्यात्मवाद, अर्थात् रहस्यवाद के माध्यम से छटपटाहट को अभिव्यक्त किया। इसका प्रयोग मानव मस्तिष्क को व्यायाम कराता नजर आता है। दूसरे कवि फक्कड़ और घुमक्कड़ स्वभाव के थे। अतः जहाँ पाते थे वहँ की क्षेत्रीय भाषाओं में अपने विचार व्यक्त करते थे।

वे कहते थे कि भाषा नही तो जीवन नहीं। भाषा के बिना जीवन की गति अवरूद्ध हो जाती है। विविध भाषाओं का ज्ञान मनुष्य को प्रभावशाली व्यक्तित्व प्रदान करता हैं ऐसा मनुष्य हर जगह अपनी छाप छोड़ जाता है। क्योंकि एक ही भाषा से हम सम्पूर्ण मानव जाति के साथ सम्पर्क नही साध सकते। हर क्षेत्र की भाषा में भौगोलिक परिवेश के कारण परिवर्तन आ जाता है। –

कोस कोस पर बदले पानी ,

दस कोस पर वानी।

कबीर ने विभिन्न प्रान्तों के संतों की सत्संगति की थी मात्र इसलिए उन्हाने पंचमेल खिचड़ी या सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग नही किया। कबीर जिस हिन्दी को काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कर रहे थे वह सही अर्थ में सम्पर्ण हिन्दी प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर रही थी।

राम किशोर शर्मा के अनुसार – ये जानबूझकर ऐसी भाषा का निर्माण कर रहे थे जिसका स्वरूप यथासम्भव अखिल भारतीय हो। जैसा कि बहुत बाद में हमने हिन्दी को राजभाषा का संवैधानिक अधिकार देते हुये उपेक्षा की है। हिन्दी का विकास भारतीय भाषाओं के सहयोग से हो

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

ताकि सम्पूर्ण भारतीय जनमानस की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। कबीर ने एक दोहे में कहा भी है –

''बोली हमारी पूरबी ताहि न चीन्हे कोई
हमरी बोली सौ लखै जो पूरब का होई।।

कबीर में निःसंदेह विलक्षण प्रतिभा थी उनका भाषा पर जबरदस्त अधिकार था। कई पदो में कबीर ने फारसी निष्ठ शब्दावली का प्रयोग किया है। –

पीरॉ मुरीदा काजिया , मुला अरू दाविस,
कहाँ थे तुम किन किये अकील है संदेश।

कबीर ने प्रेम की भाषा को सामान्य भाषा कहा है जिससे जीव एवं ब्रह्म के बीच के अभेद सम्बन्ध अनुभूत किया जा सकता है। यह तर्क चिन्तन एवं लेखनीय की सीमा से परे है।

''लिखा लिखी की है , नही देखा देखी बात''

इन्होने संस्कृत भाषा की आलोचना करते हुये लिखा है –

''संस्कृत है कूप जल , भाषा बहता नीर।''

वे जनता को जागरूक करने के लिये लोकभाषा और मातृभाषा की बात करते थे।

वही बात आज हमें वर्तमान शिक्षा नीति में भी देखने के लिये मिल रही है। नई शिक्षा नीति 2020 भी समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा की ओर जाने की बात करती है। भारत में समग्र एवं बहुविषयक सीखने की परंपरा तक्षशिला एवं नालन्दा के समय से ही प्रचलित है। एन0ई0पी0 2020 के अनुसार विद्यालयीय शिक्षा के स्तर पर कम से कम कक्षा पाँच तक तथा जहाँ सम्भव है वहाँ कक्षा आठ तक शिक्षण का माध्यम मातृभाषा होना चाहिये। शिक्षा नीति में त्रिभाषा सूत्र को पुनः लागू करने पर प्रतिबद्धता व्यक्त की है। इस नीति में भाषा शिक्षण को बढ़ावा देने हेतु तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर बल दिया गया। इस हेतु विकिपिडिया जैसे माध्यम द्वारा भारतीय भाषाओं और उससे सम्बंधित कला संस्कृति का संवर्धन किया जायेगा। मातृभाषा एवं क्षेत्रीय स्थानीय भाषाओं में शिक्षा देने पर बल दिया गया है। जहाँ तक कि तकनीकी शिक्षा भी अब क्षेत्रीय भाषाओं में दी जायेगी।

निष्कर्षतः हम समझ सकते हैं कि कबीरदास के साहित्य और चिन्तन को आज फिर से उभारने की जरूरत है। समाज में समनेस की भावना लाने की जरूरत है। कबीर के विचार आज वर्तमान की नई शिक्षा नीति में प्रसंगिक सिद्ध हो रहे हैं। चाहे वह मूल्य शिक्षा की बात हो , तार्किक चिन्तन की, भाषा की या आत्मनिर्भर भारत की, वह हर पहलू में प्रासंगिक प्रतीत होते है। कबीर की वाणी आज भी वजनदार, धारदार और प्रासंगिक है। उनकी विद्रोही चेतना अब भी जनसाधारण में आत्म विश्वास पैदा करने की सामर्थ्य रखती है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

सन्दर्भ :–

1. अयोध्या सिह उपाध्याय 'हरिऔध' – कबीर वचनावली।
2. इग्नू स्नातकोत्तर (अध्ययन सामग्री)
3. कबीर ग्रन्थावली : (A0) श्यामसुन्दरदास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानव संशाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
5. पाठक, पी0डी0 (1974) भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

इन्टरनेट स्त्रोतः–

1. https://byjus.com
2. https://www.education.gov.in
3. https://www.hindikunj.com